राजभवन सभागार में 'हमारा परिवार' के 'स्नेह मिलन' कार्यक्रम में माननीय राज्यपाल महोदय का संबोधन

(दिनांक 16 अक्टूबर 2022)

जय हिन्द!

राजभवन सभागार देहरादून में आज 'हमारा परिवार' के इस 'स्नेह मिलन' कार्यक्रम में उपस्थित होकर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है।

सबसे पहले हमारा परिवार आज उत्तराखण्ड आया है इस देवभूमि पर आया है इस के लिए मैं आप सब का तहे दिल से हार्दिक स्वागत करता हूँ।

आज हमारे परिवार का 'स्नेह मिलन' उत्तराखण्ड की इस धरती पर हुआ है जो देवभूमि, तप भूमि, सैन्यभूमि वीर भूमि है। यहां प्रकृति और संस्कृति की निराली छटा है। यहां की नदियां, पर्वत, झरने हिमालय शिखर सभी जगह देवताओं की दिव्य आत्मा का वास है।

श्री बद्रीनाथ, श्री केदार नाथ, श्री गंगोत्री, श्रीयमुनात्री श्री हेमकुंड साहिब अनगिनत तीर्थ स्थान हैं।

मुझे यह बहुत ही प्रसन्नता है कि परिवार तीर्थों के दर्शन के लिए निकला है। धर्म यात्रा पर निकला है। हमारे शास्त्रों में यात्रा का सबसे बड़ा महत्व बताया है।

तीर्थों की स्थापना भी इसी लिए हुई है कि यहां श्रद्धालू आएं।

आप लोग अलग – अलग जगहों से एकत्रित होकर देवभूमि की इस तीर्थ यात्रा पर आये हैं। धर्म यात्रा पर आये हैं यह कदेवभूमि के लिए सौभाग्य की बात है।

मैं परिवार के हर एक सदस्य का स्वागत करता हूँ।

और बहुत बहुत शुभकामनाएं भी देता हूँ।

ये जो 'हमारा परिवार' है हमारे देश की प्राचीन सभ्यता की मूल है।

परिवार अनोखी संकल्पना है। हमारे शास्त्रों में तो कहा गया है – **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** पूरी धरती ही हमारा परिवार है।

हमारे ऋषि–मुनियों की सोच एक स्थान एक प्रदेश एक देश या एक महाद्वीप तक ही नहीं रही, पूरी पृथ्वी को परिवार कहने की विशाल सोच भारत के लोगों में ही हो सकती है।

दुनिया के जो लोग हमको पिछड़ी सोच और पिछड़ी सभ्यता के कहते थे पांच हजार साल पहले का हमारा यह विचार ऐसे लोगों को एक आयना है।

ये बात सच है कि विदेशी आक्रान्ताओं के कारण सदियों तक हम गुलाम रहे। किन्तु उस हजारों सालों के संघर्ष में भी हमने अपने विचारों को, अपनी संस्कृति को अपनी सभ्यता को नही छोड़ा।

इस लिए आज भी हमारा परिवार जिन्दा है। हमारी वसुधैव कुटुम्बकम् की भावनाएं जिन्दा हैं।

'हमारा परिवार' उसी खोई हुई सभ्यता, संस्कृति, आचार, विचार, व्यवहार, प्रेम, स्नेह, आदर, सत्कार, उत्सव और आनन्द को फिर से संजोने का प्रयत्न है।

'अपना परिवार' होगा तो तभी जीवन का आनन्द आयेगा। तभी उत्सव होंगे। तभी आनन्द होगा। तभी प्रेम होगा। तभी स्नेह होगा। रिश्ते होंगे। उत्साह और उमंग होगी।

पश्चिमी देशों में परिवार की संकल्पना ध्वस्त होती जा रही हैं। माता, पिता, दादा, दादी, चाचा, चाची, ताया, तायी, भाई–भाभी, बुआ, बहन, जेठानी, ननद, भतीजे, भतीजी अनगिनत सदस्य एक परिवार में खुशहाली से रहते थे, पर अब कहां हैं?

पश्चिम की नकल मे ंहमने अपने परिवार को खो रहे हैं।

लेकिन यह बहुत ही सुन्दर बात है कि हमारा परिवार बढ़ा होता जा रहा है।

आप हमारे परिवार' से जुड़ कर अनोखा काम कर रहे है। यह हमारे गौरव की पुनः प्रतिष्ठा है।

वर्ष 2017 में 'हमारा परिवार' की स्थापना हुई थी। मुझे भी इस परिवार का एक सदस्य बनने का सौभाग्य मिला। अभी कुल पांच साल ही हुए हैं जब हरियाणा के बहादुरगढ़ से यह **'हमारा परिवार'** शुरू हुआ था। और इन पांच सालों में ही **'हमारे परिवार'** का आकार बढ़ता जा रहा है।

मुझे बहुत खुशी है कि अभी 16 प्रान्तों तक हमारे परिवार का विस्तार हो चुका है। (15662) **पन्द्रह हजार छः सौ बासठ इकाइयां**, **20 प्रकोष्ठ**, **इनमें भी शिक्षक, वैज्ञानिक, सैनिक, चिकित्सक, इंजीनियर, कृषक, छात्र, अधिवक्ता, मातृशक्ति और ऐसे ही अनेक लोगों की से यह परिवार समृद्ध बन रहा है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की ओर आगे बढ़ रहा है।**

'हमारा परिवार' बहुत अच्छा काम कर रहा है। आपस में मिलना–जुलना, परिवारों के बीच बैठना, प्रकृति वंदन, प्रकृति संरक्षण, वृक्षारोपण, सांस्कृतिक और धार्मिक यात्राएं, देश के विभिन्न तीर्थ क्षेत्रों का भ्रमण, लोक जागरण, स्वदेशी प्रसार, राष्ट्रीय शक्ति का जागरण, **'हमारा परिवार'** के सदस्यों के द्वारा किया जा रहा है।

भारत के गौरव का विस्तार यही तो हम सब का स्वप्न है।

आत्मनिर्भर भारत, विकसित भारत, समृद्ध भारत, गुलामी की मानसिकता से मुक्त भारत ही तो हम सब का स्वप्न है।

मुझे लगता है कि प्रधानमन्त्री जी के इन स्वप्नों के साथ आज सवा सौ करोड़ देश वासी आगे बड़ रहे हैं।

हमारा परिवार भी उसी दिशा में आगे बढ़ रहा है। आप सब इस कार्य में साथ दे रहे हैं। यह एक बहुत ही उंचे दर्जे का काम है।

इस हमारे परिवार की जिन्होने शुरूआत की थी वे श्री विश्वदीप जी आज स्वदेशी बचाओ अभियान के लिए देश में पदयात्रा पर निकले हैं।

ऐसे ही श्री राकेश जी, श्री अरुण यादव जी जैसे कुछ लोग हैं जिनके संकल्प से इस 'हमारा परिवार' की स्थापना की गयी थी **उन संस्थापक सदस्यों में से श्री सुरेन्द्र कुमार जी हैं जो आज हमारे साथ इस कार्यक्रम को साझा कर रहे हैं। सुरेन्द्र कुमार जी इस परिवार के राष्ट्रीय संघटक है और इस परिवार को निरंतर आगे बढ़ा रहे हैं।**

मुझे बहुत खुशी हो रही है बहन ज्योति यादव जी परिवार की मातृशक्ति के समन्वय के लिए पूरे राष्ट्रीय स्तर पर काम कर रही हैं।

उसी प्रकार से डॉ महेन्द्र पंवार जी जो कि हरयाणा प्रान्त के इकाई समन्वय प्रमुख हैं। और आज यहां जो अपने परिवार के लोग पहुंच पाये ईं इस धर्म यात्रा के समन्वयक भी हैं।

ऐसे ही श्री पंकज हंस जी इस परिवार के 20 प्रकोष्ठों के समन्वय प्रमुख हैं, जो अपने आप में एक अनोखी बात है।

कुछ लोग भी हैं जो इस परिवार में बड़ी भूमिका और सहभागिता निभा रहे हैं प्रो0 प्रवीण कुमार जी जो कि मैनेजमेंट के प्रोफेसर हैं, और सबसे अच्छी बात यह कि उत्तराखण्ड देवभूमि में जो अपना परिवार का काम देख रहे है श्री अजीत सिंह जी भी यहां हैं।

आज के इस आयोजन में सहभागी बनने के लिए आप सभी को दिल की गहराई से बधाई देता हूँ।

जय हिन्द!